विचार बिन्दु

देश का उद्धार विलासियों द्वारा नहीं हो सकता। उसके लिए सच्चा त्यागी होना आवश्यक है। –प्रेमचंद

भ्रष्टाचार अब बुरा नहीं है!

ट्रांसपेरेंसी इण्टरनेशनल द्वारा हर बरस ज़ारी होने वाला भ्रष्टाचार बोध सूचकांक (करप्शन परसेप्शन इण्डेक्स) 2024 हमारे सामने है। इस सूचकांक में भारत कुल 180 देशों की सूची में 96 वें स्थान पर है। पिछले बरस के मुकाबले इस बरस हम एक पायदान नीचे उतरे हैं। पिछले बरस हमें एक सौ में से 39 अंक मिले थे (सौ अंक सबसे उम्दा, शून्य अंक सबसे खराब), इस बार 38 अंक मिले हैं। सन् 2022 में हमारे पास 40 अंक थे। मतलब यह कि इस सूचकांक के अनुसार हमारे यहां भ्रष्टाचार बढ़ा है। वैसे मात्र एक अंक कम होने से हमारी रैंकिंग तीन पायदान नीचे उतर गई है। यहां यह याद कर लेना भी अनुचित नहीं होगा कि सन 2016 में प्रधानमंत्री जी ने जो नोटबंदी की थी उसके द्वारा भ्रष्टाचार की कमर तोड़ देने के दावे किए गए थे। अब भी बहुत मुमकिन है कि सरकारी प्रवक्ता इस सूचकांक को भारत की छवि बिगाड़ने वाला और दुर्भावनापूर्ण बता दे। ऐसा हमेशा ही होता है।

इस भ्रष्टाचार सूचकांक के अनुसार वैश्विक औसत 43 अंक है और यह कई बरस से एक ही जगह ठहरा हुआ है। लेकिन यह भी एक सच्चाई है कि दुनिया के दो-तिहाई देशों के अंक पचास से कम हैं। ज़ाहिर है कि दुनिया की आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा भ्रष्टाचार की गिरफ़्त में है। वैसे कम से कम 32 देश ऐसे हैं जिन्होंने सन् 2012 के बाद से अपनी स्थिति बेहतर बनाई है अर्थात अपने यहां भ्रष्टाचार को कम करने में कामयाबी हासिल की है, लेकिन यह खुशी इस तथ्य से कम हो जाती है कि कम से कम 148 देश ऐसे हैं जिनमें या तो भ्रष्टाचार जहां था वहीं ठहरा है या फिर बढ़ा है। इस बार के सूचकांक में जलवायु परिवर्तन के संबंध में भ्रष्टाचार की विशेष चर्चा की गई है और कहा गया है कि सारी दुनिया में बहुत बड़ी जनसंख्या वैश्विक तापन (ग्लोबल हीटिंग) के गंभीर दुष्परिणाम भुगत रही है क्योंकि ग्रीनहाउस गैस स्त्राव को कम करने के लिए निर्धारित धनराशि की चोरी या दुरुपयोग हो रहा है। इसी तरह पर्यावरणीय क्षति को बढ़ाने वाले जलवायु संकट को नियंत्रित करने वाली नीतियों को भ्रष्टाचार बहुत तेज़ी से अवरुद्ध कर रहा है।

मुझे इस सूचकांक की सबसे ख़ास बात यह लगी कि यहां भ्रष्टाचार को बहुत स्पष्ट तरह से समझाया गया है। सामान्यत: हम किसी भी ग़लत काम को और ख़ास तौर पर जिसमें धनराशि का लेन-देन होता हो, भ्रष्टाचरण कहते मानते हैं। लेकिन बात केवल इतनी नहीं है। इस सूचकांक के अनुसार प्रदत्त शक्तियों का निजी लाभ के लिए दुरुपयोग भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार की वजह से विश्वास नष्ट होता है, लोकतंत्र कमज़ोर होता है, आर्थिक विकास बाधित होता है और असमानता, सामाजिक विभाजन और पर्यावरणीय संकट में बढ़ोतरी होती है। सूचकांक के अनुसार भ्रष्टाचार तभी उजागर होगा और भ्रष्ट लोगों पर तभी कार्यवाही होगी जब हम यह समझ जाएंगे कि भ्रष्टाचार होता कैसे है।

सूचकांक में बताया गया है कि भ्रष्टाचार कई तरह से होता है और इसमें ये बातें शामिल हो सकती हैं: 1। लोकसेवकों द्वारा दी जाने वाली सेवाओं के बदले में धन या अनुग्रह चाहना या प्राप्त करना, 2। राजनीतिज्ञों द्वारा सार्वजनिक धन का दुरुपयोग किया जाना और उनके द्वारा अपने प्रायोजकों, दोस्तों और परिजनों को सार्वजनिक नौकरियां या अनुबंध दिया जाना, निगमों द्वारा आकर्षक सौदे लेने के लिए अधिकारियों को रिश्वत देना। बताया गया है कि भ्रष्टाचार कहीं भी हो सकता है – व्यापार में, सरकार में, न्यायालयों में, मीडिया में और सिविल सोसाइटी में। यह स्वास्थ्य से लगाकर शिक्षा, मूलभूत व्यवस्थाओं और खेलों में अर्थात सब जगह संभव है। भ्रष्टाचार में कोई भी लिप्त हो सकता है– राजनीतिज्ञ, सरकारी अधिकारी, लोक सेवक, व्यापारी या आमजन। एक और ख़ास बात यहां यह कही गई है कि बदलती हुई परिस्थितियों में भ्रष्टाचार भी अपने रूप बदलता रहता है। यह नियमों, कानूनों यहां तक कि तकनीक के बदलने में भी संभव होता है। समाज भ्रष्टाचार का मूल्य अपनी आज़ादी को गंवा कर चुकाता है।

यहां सबसे अहम बात जो कही गई है वह यह है कि भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए हमें पारदर्शिता को अपनाना चाहिए। पारदर्शिता का अर्थ है कौन, क्यों, कैसे और कितना – इन सवालों का जवाब जानना। इस बात को अगर और स्पष्ट किया जाए तो यह कि औपचारिक और अनौपचारिक नियमों, योजनाओं प्रक्रियाओं और क्रियाओं को पूरी तरह उजागर करना। असल में पारदर्शिता हमें अर्थात आम जन को जन हित के लिए सक्षम करती है। सूचना चाहना और प्राप्त करना मानवाधिकार है और इससे भ्रष्टाचार के खिलाफ सुरक्षा प्राप्त होती है। ध्यान देने की बात यह है कि पारदर्शिता का अर्थ केवल सूचना हासिल हो जाना ही नहीं है, यह भी है कि सूचना आसानी से प्राप्त की जा सके और वह इस रूप में हो कि आम नागरिक भी उसे समझ और उसका प्रयोग कर सके।

> **मुझे हमारे समाज की और वर्तमान की सबसे बड़ी त्रासदी यह लगती है कि हमने अच्छे और बुरे के बीच भेद करना बंद कर दिया है। अब किसी की बुराई हमें आहत ही नहीं करती है। बुराई को जैसे हमने धो-पोंछ कर पाक साफ़ कर लिया है। और जब हम बुराई मानते ही नहीं है तो फिर उसे दूर करने की तो बात ही क्या करें?**

यहीं यह भी याद किया जा सकता है कि हमारे यहां सूचना का अधिकार प्राप्त करने के लिए कितनी लंबी लड़ाई लड़ी गई और कैसे वह अधिकार प्राप्त किया गया। लेकिन इस कथा का एक स्याह पक्ष यह भी है कि हमारे प्रशासन और सरकारों ने क्रमश: इस सूचना के अधिकार को निष्प्रभावी बना दिया है। अब सूचना का अधिकार केवल सरकारी दस्तावेज़ों में रह गया है। आम नागरिक के लिए किसी भी तरह की सूचना प्राप्त करना लगभग नामुमकिन है। यह सूचना प्रदान करना जनहित में नहीं है एक ऐसी इबारत है जिसका बेख़ौफ और बेशर्मी से इस्तेमाल किया जाता है। आज हालत यह हो गई है कि किसी की शिक्षा जैसे बहुत सामान्य मामले में भी आपको जानकारी देने से मना कर दिया जाता है। बहुत बड़े कोष बना दिये जाते हैं, उनमें अकूत संपदा एकत्रित कर ली जाती है लेकिन उनको जानकारी देने वाले प्रावधानों से अलग रख कर सारी पारदर्शिता को धता बता दी जाती है। ये तो महज़चंद उदाहरण हैं। हर तरफ ऐसी ही स्थितियां हैं।

भले ही राजनीतिक दल अपनी छवि को उजला बताने के लिए ढोल पीट-पीटकर यह कहें कि वे भ्रष्टाचार को बहुत पीछे छोड़ आए है और यह कि जितना भी भ्रष्टाचार है वह उनसे इतर राजनीतिक दलों द्वारा ही किया गया था, ज़मीनी यथार्थ जो छवि प्रस्तुत करता है वह भिन्न है। कैसे जो कल तकभ्रष्ट बताए जाते थे, सत्तारूढ़ दल की वॉशिंग मशीन में जाते ही पवित्र हो जाते हैं, कैसे अचानक कोई सत्ता में आते ही वैभवशाली हो जाता है, कैसे सत्तारूढ़ दल अचानक भव्यातिभव्य दफ़्तर खड़े कर लेते हैं, कैसे वे लोग जो सत्ता के समानांतर हैं उन्हीं को सारे ठेके मिल जाते हैं, कैसे हम आय के ज्ञात स्त्रोतों से अधिक संपत्ति रखने वालों को सर आंखों पर बिठाते हैं, कैसे समाज में चारों तरफ वैभव पसरा दिखाई देता है और कैसे हमने आर्थिक अपराध करने वालों को नीची नज़रों से देखना बंद कर दिया है – इन सब बातों को याद करना बहुत दुखद है।

ट्रांसपेरेंसी इण्टरनेशनल की इस रिपोर्ट में जो बताया गया है, असल में तो वह हमारे चारों तरफ पसरे भ्रष्टाचार के कीचड़ का बहुत छोटा हिस्सा है। जीवन में जैसे कुछ भी साफ़ सुथरा नहीं रह गया है। भ्रष्टाचार अब किसी को न तो आहत करता है न व्यथित। अब हम किसी को इसलिए खारिज़ नहीं करते हैं कि वह ज्ञात रूप से भ्रष्ट है। किसी का मूल्यांकन करते हुए हम उसके भ्रष्ट होने के बारे में तो सोचते ही नहीं हैं। यह तो जैसे उतना ही स्वाभाविक है जितना किसी का सजीव मनुष्य होना है। मनुष्य है तो भ्रष्ट होगा ही। इसमें चौंकने और आहत होने की क्या बात है! सच तो यह है कि हमने इसे जीवन के एक यथार्थ के रूप में स्वीकार कर लिया है। किसी का भ्रष्ट होना अब उसे हमारी नज़रों में गिराता नहीं है। उलटे अगर हमें अपने आस पास अगर कोई ऐसा नज़र आता है जो भ्रष्ट नहीं है तो हम उसकी अव्यावहारिकता और मूर्खता पर लज्जित और चकित होते हैं।

बहुत बार यह भी लगता है कि हमारा पारंपरिक सोच भी कहीं न कहीं भ्रष्टाचार की इस स्वीकार्यता के लिए उत्तरदायी है। हरिशंकर परसाई ने कभी लिखा था कि जिस देश में पूरे साल पढ़ाई न करने वाला निकम्मा विद्यार्थी भी परीक्षा देने जाते समय किसी मंदिर के आगे रुक कर भगवान से यह कहे कि हे भगवान, अगर तुम मुझे पास कर दोगे तो मैं सवा रुपये का प्रसाद चढ़ाऊंगा, उस देश में भ्रष्टाचार ख़त्म हो ही नहीं सकता है। मेरा आशय किसी की आस्था को ठेस पहुंचाना क़तई नहीं है, लेकिन मैं बहुत बार सोचता हूं कि कैसे किसी पवित्र नदी में स्नान करने से आपके सारे पाप धुल सकते हैं? यह परिकल्पना ही बहुत अजीब है। क्या नदी में स्नान करना अपने आप में साध्य नहीं हो सकता?

मुझे हमारे समाज की और वर्तमान की सबसे बड़ी त्रासदी यह लगती है कि हमने अच्छे और बुरे के बीच भेद करना बंद कर दिया है। अब किसी की बुराई हमें आहत ही नहीं करती है। बुराई को जैसे हमने धो-पोंछ कर पाक साफ़ कर लिया है। और जब हम बुराई मानते ही नहीं है तो फिर उसे दूर करने की तो बात ही क्या करें?

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

प्रदेश के स्कूलों में सफाईकर्मियों के 27986 पद, सिर्फ 5301 ही भरे हैं

शौचालयों की सफाई हेतु जमादारों के सिर्फ 520 पद स्वीकृत, इसमें से 376 पद खाली हैं

बीकानेर, (निसं)। स्कूल में झाड़ू लगाते शिक्षक किसी स्वच्छता अभियान में शामिल नहीं हैं, बल्कि ये इनका रोज का काम है। प्रदेश के अधिकतर स्कूलों में यही हालत है।

प्रदेश के स्कूलों में साफ-सफाई जैसे कामों के लिए सहायक कर्मचारियों के 27986 पद स्वीकृत हैं, लेकिन, इनमें से 22685 पद खाली हैं। सिर्फ 5301 ही भरे हैं। वहीं शौचालयों की सफाई के लिए जमादारों के सिर्फ 520 पद स्वीकृत हैं। इसमें से 376 पद खाली हैं। इस वजह से प्रदेश सरकार साफ-सफाई जैसे कार्यों के लिए हर स्कूल को महीने का 500 से एक हजार रुपए का बजट देती है। इतने बजट में शौचालय और स्कूल परिसर की सफाई संभव ही नहीं है। ऊपर से इस शिक्षा सत्र में अभी तक सफाई के मद में मिलने वाला बजट नहीं मिला है। मजबूरी में प्रिंसिपल शौचालय की सफाई के लिए अपनी जेब से पैसा देकर निजी कर्मचारी रखते हैं। प्रदेश में 65299 सरकारी स्कूल हैं। अधिकारियों का दौरा होता है तो वे सफाई व्यवस्था पर सबसे ज्यादा ध्यान देते हैं। ये अच्छी बात है, लेकिन इसके लिए कोई स्थाई व्यवस्था नहीं है। बीकानेर कलेक्टर नम्रता वृष्णि दो महीने पहले एक स्कूल पहुंचीं। सफाई ना होने पर एक आरएएस अधिकारी को जांच के लिए भेज दिया।

> **मजबूरी में प्रिंसिपल शौचालय की सफाई के लिए अपनी जेब से पैसा देकर निजी कर्मचारी रखते हैं**

जांच में बचने के लिए शिक्षकों ने खुद सफाई की ताकि कोई कार्रवाई ना हो। वो आरएएस अब हर महीने स्कूल की चेकिंग करती हैं। कार्रवाई से बचने के लिए शिक्षक अब पढ़ाई के साथ खुद झाड़ू लेकर स्कूल की सफाई कर रहे हैं। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर भी कई बार स्कूलों में सफाई को लेकर सख्ती दिखा चुके हैं, लेकिन अभी तक व्यवस्था में कोई सुधार नहीं हुआ है। मौजूदा वित्तीय वर्ष मार्च में समाप्त हो जाएगा। स्कूलों को अब तक शौचालय सफाई के लिए दिए जाने वाल बजट नहीं मिला है। यानी जून से जो स्कूल खुले वो फरवरी तक कैसे साफ होंगे। कौन सा ऐसा कार्मिक है जो 10 महीने बिना पैसे के स्कूलों के शौचालय साफ करेगा। सरकारी कर्मचारी होने का ठप्पा इतना मजबूत है कि वे मूल काम ही कर लें तो ही बहुत है। सरकार चाहती है कि सहायक कर्मचारी शौचालयों की सफाई करें तो ये संभव नहीं। सहायक कर्मचारी तो शिक्षकों को ही सीधी आंखें दिखाते हैं। ऐसे कई विवाद सामने आ चुके हैं। कुछ मामले को इतना तूल पकड़ चुके कि मामला जातिगत अस्मिता तक पहुंच जाता है। वहीं, ग्रामीण स्कूलों के शौचालयों में पानी के कनेक्शन तक नहीं है। ना पानी की टंकी है। राज्य के सरकारी स्कूलों से संबंधित सभी तरह का डेटा विभाग के शाला दर्पण पोर्टल पर उपलब्ध है। लेकिन शाला दर्पण पोर्टल के आंकड़े गुमराह कर रहे हैं।

नाम नहीं छापने की शर्त पर एक शिक्षिका ने बताया कि स्कूल में प्लेग्राउंड व शौचालय नहीं होने की स्थिति में भी जिले के अधिकारी रिपोर्ट में हां का ऑप्शन ही भरने के लिए कहते हैं, ताकि जिले की रिपोर्ट निगेटिव नहीं जाए।

जल्द चलेगी वंदे भारत, रेलवे बोर्ड ने बीकानेर मंडल को प्रारंभिक मेंटेनेंस का काम सौंपा

बीकानेर स्टेशन पर प्रारंभिक मेंटेनेंस की सुविधा मिलते ही वंदे भारत ट्रेन शुरू हो जाएगी

बीकानेर, (निसं)। बीकानेर से दिल्ली के लिए जल्द ही वंदे भारत ट्रेन शुरू हो जाएगी। ट्रेन को शुरू करने के लिए रेलवे बोर्ड ने बीकानेर मंडल को प्रारंभिक मेंटेनेंस का काम सौंपा है। बीकानेर स्टेशन पर प्रारंभिक मेंटिनेंस की सुविधा मिलते ही वंदे भारत ट्रेन शुरू हो जाएगी। रेलवे बोर्ड ने पिछले दिनों वंदे भारत ट्रेन का अस्थायी टाइम टेबल भी जारी कर दिया है।

अस्थायी टाइम टेबल के अनुसार वंदे भारत सुबह 5:55 बजे बीकानेर से रवाना होकर दोपहर 12:15 बजे दिल्ली पहुंचेगी। वापसी में शाम 4:30 बजे दिल्ली से रवाना होकर रात 10:50 बजे बीकानेर पहुंचेगी। इस अस्थायी टाइम टेबल में ट्रेन का एक स्टॉपेज रेवाड़ी दिखाया गया है। अन्य स्टॉपेज तय करने के लिए उत्तर-पश्चिम रेलवे और बीकानेर मंडल से सुझाव मांगे हैं। वंदे भारत का रैक उपलब्ध होने, टाइमिंग एवं स्टॉपेज फाइनल होने के साथ-साथ बीकानेर मंडल में प्रारंभिक मेंटिनेंस की सुविधा उपलब्ध होने के बाद रेलवे बोर्ड कभी भी ट्रेन चलाने की अनुमति दे सकता है। अस्थायी टाइम टेबल के अनुसार बीकानेर से दिल्ली किसी जरूरी काम के लिए जाने वाला व्यक्ति काम निबटा कर उसी दिन रात को वापस बीकानेर पहुंच सकता है। वर्तमान में एक्सप्रेस एवं सुपरफास्ट ट्रेन बीकानेर से दिल्ली

> **रेलवे बोर्ड ने पिछले दिनों वंदे भारत ट्रेन का अस्थायी टाइम टेबल भी जारी कर दिया है**

तक पौने आठ घंटे का समय लेती दिल्ली है, जबकि वंदे भारत से करीब 6.20 घंटे में दिल्ली पहुंचा जा सकेगा। इस तरह 1.25 घंटे की बचत होगी।

बीकानेर से दिल्ली के बीच दिल्ली मौजूदा एक्सप्रेस ट्रेन के 11 स्टॉपेज है, जबकि वंदे भारत में तीन से चार स्टेशन पर ही ठहराव होगा। मौजूदा ट्रेन 100 से 110 की स्पीड से चल रही है, जबकि वंदे भारत 130 किमी प्रतिघंटे की स्पीड से चलेगी। वंदे भारत के कोच पूरी तरह से वातानुकूलित हैं और इनमें इलेक्ट्रिक आउटलेट, रीडिंग लाइट, सीसीटीवी कैमरे, स्वचालित दरवाजे, बायो-वैक्यूम शौचालय, सेंसर आधारित पानी के नल और यात्री सूचना प्रणाली की सुविधा है। बीकानेर से दिल्ली सराय रोहिल्ला के लिए चलने वाली वंदे भारत ट्रेन का नॉर्दर्न रेलवे के दिल्ली कैंट और गुड़गांव में ठहराव हो सकता है। यहां ट्रेन का ठहराव इसलिए किया जाएगा क्योंकि यहां से दिल्ली एयरपोर्ट नजदीक पड़ता है। बीकानेर से जाने वाले यात्री को आगे हवाई सफर करना हो तो वह वहां उतर कर एयरपोर्ट आसानी से पहुंच सकता है।

कैप्टन शशि किरण, सीपीआरओ, उत्तर-पश्चिम रेलवे का कहना है कि रेलवे बोर्ड का लेटर आने की सूचना जरूर हमें मिल रही है, लेकिन हमारे पास अभी तक अधिकृत रूप से लेटर नहीं आया है। फिर भी बीकानेर में वंदे भारत ट्रेन की प्रांरभिक मेंटिनेंस की सुविधा अभी तक नहीं है। प्रारंभिक मेंटिनेंस की सुविधा जल्द ही वहां उपलब्ध करवा दी जाएगी। सुविधा शुरू होने के बाद वंदे भारत ट्रेन को शुरू कर दिया जाएगा। रेलवे बोर्ड ने प्रांरभिक मेंटिनेंस का जिम्मा बीकानेर मंडल को दिया है।

सेना के जवान अजयपाल सिंह भाटी ने दहेज लिए बिना विवाह किया

जोधपुर, (कासं)। भारतीय सेना में कार्यरत जवान अजयपाल सिंह भाटी ने अपनी जीवन संगिनी का हाथ थामने के दौरान ग्यारह लाख रुपए की टीके की राशि लौटाकर शगुन के तौर पर मात्र इक्कीस रुपए की राशि एवं श्रीफल स्वीकार कर राजपूत समाज में एक आदर्श मिसाल पेश की।

जोधपुर जिले की बालेसर तहसील के शूरसिंह नगर खुडियाला गांव निवासी ऑनरेरी कैप्टन नारायण सिंह भाटी के भारतीय सेना में कार्यरत बड़े पुत्र अजयपाल सिंह भाटी का विवाह 14 फरवरी को जैतारण तहसील के गांव टीबडी निवासी किशन सिंह चांदावत की पुत्री मूमल कंवर के साथ हुआ। विवाह की रस्मों के दौरान दुल्हन मूमल कंवर के पिता किशन सिंह ने दूल्हे अजयपाल सिंह भाटी के हाथों में टीके की राशि ग्यारह लाख रुपए से भरा थाल थमाया तो देश की रक्षा के लिए हाथों में बन्दूक थामे रखने वाले सेना के जवान दूल्हे अजयपाल सिंह भाटी ने ग्यारह लाख रुपए की टीके की राशि का थाल लौटाकर शगुन के तौर पर मात्र इक्कीस रुपए एवं श्रीफल

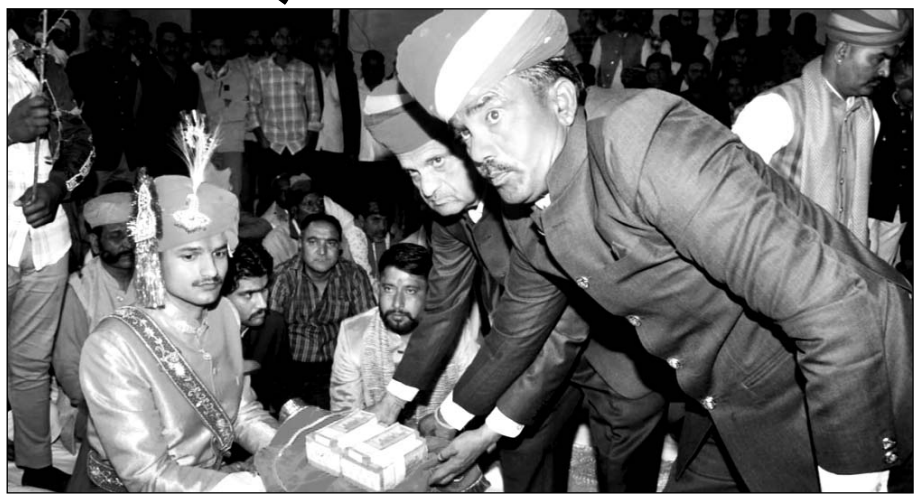

दुल्हे ने ग्यारह लाख रुपए की टीके की राशि लौटाकर इक्कीस रुपए एवं श्रीफल स्वीकार किया।

स्वीकार कर समाज में अनूठी मिसाल पेश की। अपनी गृहस्थी की गाड़ी को चलाने के लिए दूसरे पहिए मूमल कंवर का हाथ थाम कर परिणय सूत्र में बंधे। राजपूत समाज के दूल्हे अजयपाल सिंह भाटी ने विवाह के दौरान लाखों रुपए का दहेज का सामान भी नहीं लिया। दुल्हन के पिता किशन सिंह चांदावत ने अपने घर की मर्यादा मूमल कंवर को शगुन के तौर पर पांच वस्तुएं प्रदान कर ससुराल के लिए विदा किया।

दूल्हे के रिश्तेदार चंदन सिंह भाटी कपूरिया ने कहा कि यह विवाह राजपूत समाज में दहेज प्रथा को रोकने के लिए मिशाल बनेगा। इससे समाज को नई दिशा एवं युवाओं को प्रेरणा मिलेगी।

यहां यह उल्लेखनीय है कि खुडियाला निवासी ऑनरेरी कैप्टन नारायण सिंह भाटी की पुत्री सुमन कंवर का विवाह पांच फरवरी 2022 को जोधपुर की बी.जे. एस. कॉलोनी में रह

> **दूल्हे अजयपाल सिंह भाटी ने विवाह के दौरान लाखों रुपए का दहेज का सामान भी नहीं लिया**

रहे अरविन्द सिंह राठौड़ के साथ हुआ था। तब दूल्हे बने अरविन्द सिंह राठौड़ ने भी भारतीय सेना में रहे अपने दादोसा स्वर्गीय भैरु सिंह राठौड़ (जालसू) पुत्र स्व. मेजर नाथू सिंह की प्रेरणा से अपने विवाह के दौरान टीके के राशि एवं दहेज लेने से पहले ही मना कर दिया था। उस दौरान सेना में कार्यरत खुडियाला निवासी नारायण सिंह भाटी ने अपने पुत्रों के विवाह के दौरान लाखों रुपए की टीके की राशि एवं दहेज नहीं लेने का मानस बना लिया था। इसी के चलते नारायण सिंह भाटी ने सेना में कार्यरत अपने बड़े पुत्र अजयपाल सिंह के विवाह में टीके की राशि व दहेज नही लिया। अजयपाल सिंह भाटी के छोटे भाई भोपेन्द्र सिंह भाटी भारतीय जल सेना में कार्यरत है। दादोसा भंवर सिंह भाटी भी भारतीय सेना में थे।

उदावास पंचायत में 1.28 करोड़ का घोटाला

बीडीओ ने सरपंच और वीडीओ के खिलाफ सदर थाने में मामला दर्ज करवाया

झुंझुनूं, (निसं)। उदावास पंचायत की सरपंच सुमन देवी तथा वीडीओ पीयूष भारद्वाज के खिलाफ सदर थाने में केस दर्ज करवाया गया है। सदर थाने में उदावास सरपंच सुमन देवी तथा वीडीओ पीयूष भारद्वाज के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सदर थाने में झुंझुनूं पंचायत समिति के विकास अधिकारी करणीराम ने लिखित रिपोर्ट देकर केस दर्ज कराया है कि उदावास वीडीओ पीयूष भारद्वाज ने 1 करोड़ 28 लाख 43 हजार 95 रूपए के 747 भुगतान अलग-अलग संविदा कर्मचारी के खातों में भुगतान किया है जो अनियमित भुगतान की श्रेणी में माने गए हैं। कोई भी भुगतान सरपंच की सहमति के बिना नहीं होता, इसलिए सरपंच सुमन देवी तथा वीडीओ पीयूष भारद्वाज के खिलाफ केस दर्ज कराया गया है।

रिपोर्ट में बताया गया है कि इस भुगतान के बारे में जांच करने के लिए और भुगतान का रिकॉर्ड लेने के लिए कई बार पंचायत समिति की टीम पंचायत भवन गई, लेकिन वहां पर वीडीओ पीयूष भारद्वाज नहीं मिले, ना ही जांच कमेटी के समक्ष प्रस्तुत हो रहे हैं और ना ही रिकॉर्ड दे रहे हैं। जिसके चलते अब एफआईआर दर्ज करवाई है।

जानकारी के अनुसार वीडीओ पीयूष भारद्वाज द्वारा पिछले साल ना केवल उदावास, बल्कि इंडाली में करीब 90 लाख तथा प्रतापपुरा पंचायत में करीब 20 लाख से ज्यादा का भुगतान भी किया गया था, जो संदिग्ध था और अनियमित भुगतान की श्रेणी में था। जिस पर उन्हें सस्पैंड कर दिया था। लेकिन बाद में पीयूष भारद्वाज ने कोर्ट से अपने निलंबन आदेश पर स्टे ले लिया था। पीयूष भारद्वाज उदावास में ही वीडीओ पद पर कार्यरत है। उनके पास इंडाली और प्रतापपुरा पंचायत का अतिरिक्त कार्यभार था।

इधर, वीडीओ पीयूष भारद्वाज ने बताया कि उन्होंने किसी तरह का गबन नहीं किया है। जो भुगतान किया गया है। उनके कार्य मौके पर मौजूद है। पंचायत समिति के पास सारा रिकॉर्ड है। एफआईआर के बारे में उन्हें जानकारी नहीं है। वे हर प्रकार की जांच में सहयोग दे रहे हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 17 फरवरी, 2025

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, चित्रा नक्षत्र मंगलवार प्रात: 7:35 तक, शूल योग प्रात: 8:54 तक, कौलव करण दिन 3:35 तक, चन्द्रमा आज सायं 6:02 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-मिथुन, बुध-कुम्भ, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज महापात योग सायं 4:45 से रात्रि 9:13 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:30 तक, शुभ 9:53 से 11:17 तक, चर 2:05 से 3:29 तक, लाभ-अमृत 3:24 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:06, सूर्यास्त 6:16

मेष
व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। दिनचर्या में सुधार होगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। शुभ-धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य से संबंधित यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। शुभ कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला
नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

वृश्चिक
आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मीन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज मांगलिक-धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।